'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार–मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११३ | वाराणसी, शनिवार, ३ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

नगरौठा (जम्मू) ९-९-'५९

यह समुदाय का युग है, इसमें 'मैं' और 'मेरा' नहीं चलेगा

कश्मीर छोटी-सी शक्ल में सारे हिन्दुस्तान का एक नमूना है। हिन्दुस्तान की तरह ही यहाँ भी डोग्री, कश्मीरी, उर्दू, पंजाबी, हिन्दी, बोधी आदि मुख्तलिफ़ जबानें और सिख, बौद्ध, ईसाई, जैन आदि मुख्तलिफ़ मज़हब हैं। यहाँकी कुदरत भी तरह-तरह का नजारा दिखाती है, जम्मू की तरफ कपासवाला मुल्क है तो कश्मीर-वैली की तरफ चावलवाला मुल्क है। जम्मू में गर्मी है, कश्मीर में ठंड। हमें यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि एक छोटे-से हिस्से में इतनी विविधता और खूबसूरती है।

मीठी याददाश्त

हमने कश्मीर-वैली में मुसलमान ज्यादा और हिन्दू कम देखे। बौद्ध भी थोड़े ही हैं। लेकिन हमने वहाँ एक-दूसरे के खिलाफ जजबा नहीं देखा। एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान, पाकिस्तान बने, लोगों के दिमाग बिगड़े, फिजा बिगड़ी और काफी मार-काट हुई। लेकिन उस वक्त भी कश्मीर-वैली में वे सारी चीजें नहीं चलीं, जो पंजाब में चलीं। इसपर से मेरे ध्यान में यह बात आयी कि यहाँके लोगों का मिजाज भी यहाँ-के मौसम जैसा ही ठंडा है। जैसे पानी खुद-ब-खुद गरम नहीं है, लेकिन मौके पर गर्मी लगने से वह भी गरम हो जाता है, वैसे ही यहाँके लोगों का मिजाज मौके पर गरम हो सकता है, लेकिन यह बात जरूर है कि यहाँके लोग फित्रत (स्वभाव) से ठंडे दिमाग के हैं। इस तरह की एक मीठी याददाश्त लिये हम कश्मीर से बिदा हो रहे हैं।

इन्सानियत की रक्षा के लिए जमीन दें

लोग कहते हैं कि कश्मीर में सरकार ने जमीन का मसला हल कर दिया। लेकिन सरकार कितना भी चाहे, तब भी वह जमीन का मसला हल नहीं कर सकती। लोगों का मसला लोग ही हल कर सकते हैं। यह ठीक है कि सरकार ने सीलिंग बनाया है, लेकिन गाँव का मसला हल नहीं हुआ, बेजमीनों को जमीन नहीं मिली और दिलजमाई भी नहीं हुई। वह होना मुमकिन भी नहीं था। हम सरकार से वैसी उम्मीद रखें तो वह भी गलत होगा। अपना मसला लोग स्वयं हल कर सकते हैं।

यहाँपर सीलिंग बनाने के बाद भी लोग दान दे रहे हैं, इसका दुनिया को आश्चर्य मालूम हो सकता है, लेकिन मुझे ताज्जुब नहीं होता। मैं जानता था कि इन्सान के दिल में कुछ चीज है। लोगों को ठीक ढंग से ठीक बात समझायी जाय तो वे समझते हैं। हम उन्हें समझाते हैं कि आपके पास जमीन थोड़ी हो तो भी उसका एक हिस्सा अपने बेजमीन भाइयों के लिए देना आपका फर्ज है, जमीन की मिलकियत का दावा करना कुफ्र है। इसलिए अगर हम जमीन की मिलकियत का बोझ सिर पर उठायेंगे तो ठीक ढंग से सोच ही नहीं सकेंगे और न इन्सा-नियत को ही कायम रख सकेंगे। इन्सानियत की रक्षा के लिए हमें पहले कदम के तौर पर अपने बेजमीन भाइयों का जमीन पर हक मानना चाहिए और सभीको भूमाता की सेवा का हक देना चाहिए।

हृदय-परिवर्तन का प्रतीक

ऊधमपुर जिले में लोगों ने दो हजार कनाल से ज्यादा जमीन दान दी। कुल मिलाकर जमीन का यह रकबा कम ही माना जायगा, लेकिन लोगों ने अपना पेट काटकर यह दान दिया है। लोगों के पास अच्छी जमीन है। सारी जमीन सरकार ने ले ली। इसलिए देनेवालों ने बड़ी श्रद्धा से और भक्ति से दान दिया है। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में हमें जमीन काफी मिली, लेकिन हम यह नहीं कह सकते हैं कि जिन्होंने जमीन दी, उन सबका हृदय-परिवर्तन हो गया। एक बहाव था, जिसमें कइयों ने दिया। मनुष्य दूसरों को देखकर कोई अच्छा काम करे तो उसे बुरा नहीं कह सकते हैं, उपनिषदों में कहा है 'श्रिया देयम्, ह्रिया देयम्'। लज्जा (शर्म) से देना भी ठीक है। यहाँपर लोगों ने जो जमीन दी है, वह हृदय से दी है और ठीक सोचकर दी है। इसलिए यहाँ जितनी जमीन मिली, उसे हृदय-परिवर्तन का चिन्ह, निशानी माना जा सकता है।

सबकी समझ में आने लायक बात

यहाँपर बहुत सारे लोग नाहक सियासत में पड़े हैं और वे सोचते हैं कि सियासत से कुछ हो सकता है। लेकिन उनका यह सोचना गलत है। सियासत कोई चीज ही नहीं है, वह बिलकुल नाचीज है। उससे क्या होनेवाला है ? हमें ऐसे लोगों

www.vinoba.in

से खुलकर बातें करने का मौका मिला, जो सियासत में पड़े हैं। उन लोगों ने हमसे कहा कि आज तक इस छोटे से मुल्क में ऐसा कोई नहीं आया, जो गाँव-गाँव घूमा हो, सभी पार्टियों के लोगों से मिला हो और हरएक से खुलकर बातें करता हो। मेरी जबान साफ थी, इसका एक ही मानी है कि मेरा प्रहार भी उन्होंने मीठा मान लिया। मैंने बार-बार कहा कि दुनिया के और खास कर इस इलाके के मसले सियासत से हल नहीं होंगे और न मजहब से ही हल होंगे, वे अगर हल होंगे ही तो रूहानियत से होंगे। यह समझना मुश्किल नहीं है। मैंने देखा कि मेरी यह बात गाँव-गाँव के अपढ़ लोग भी समझते हैं।

सोने का क्या मूल्य है ?

एक गाँव में मैं गाँववाले एक शख्स का हाथ पकड़कर मुश्किल रास्ते से जा रहा था। उसके हाथ में सोने की अंगूठी थी, जो मुझे चुभ रही थी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी अंगूठी मुझे तकलीफ देती है तो उसने अंगूठी निकालकर जेब में डाल ली। दूसरे भाई ने उससे कहा कि क्या तुम बात का इशारा नहीं समझे ? आखिर वह समझ गया और उसने अंगूठी मुझे देना चाहा। मैंने कहा, सोना मनुष्य को भ्रम में डालनेवाली चीज है। इससे क्या पैदा होता है ? ये सोने के पत्थर खेत की मेंड़ में रखे जायँ और उनपर पानी गिरते-गिरते, उनका थोड़ा-सा हिस्सा मिट्टी में भी मिल जाय तो क्या उस मिट्टी में से फसल आ सकती है ? उसने कहा कि मैंने ऐसी बातें सिर्फ सन्तों की जबान से सुनी थीं। फिर मैंने पूछा, क्या यह बात जँचती है ? हाँ, उसने कहा। तो क्या मैं यह अंगूठी फेंक दूँ तो उसने स्वीकृति दे दी। मैंने अंगूठी जंगल में फेंक दी और देखा कि उसे दुःख होने के बजाय उसमें एक किस्म की मस्ती थी। उसने भूदान-यज्ञ में बहुत काम किया।

हमारे लोगों के दिल इतने बहादुर हैं। वे चीज को समझते हैं, उन्हें कोई समझानेवाला हो तो वे मिथ्या चीज का भ्रम छोड़ सकते हैं। मेरे साथवालों को इस घटना से ताज्जुब हुआ। उन्हें लगा कि सोने की अंगूठी बहुत बड़ी चीज है। उसे कैसे फेंका जाय ? लेकिन हमें समझना चाहिए कि सोना कोई चीज ही नहीं है। हम नाहक जमीन खोद-खोदकर सोना बाहर निकालते हैं। सोने का भस्म बनाया जाय तो उसका कुछ उपयोग क्षय-रोगियों के इलाज के लिए हो सकता है, लेकिन उसके फायदे थोड़े हैं। लोगों ने आज उसकी जो कीमत मानी है, वह खयाली कीमत है। उसका बाहर से कोई प्रमाण नहीं है। आज सोने की कीमत १०० रु० तोला है, लेकिन वह भाई आसानी से अंगूठी फेंक देने के लिए राजी हुआ। यह देखकर मैं खुश हुआ कि हिन्दुस्तान का दिल जिंदा है, मुर्दा नहीं है।

गरीबी का मुकाबला करने का तरीका

हमने कश्मीर-वैली में हद दर्जे की गुर्बत देखी। ऐसी गुर्बत उड़ीसा को छोड़कर हिन्दुस्तान के दूसरे किसी भी सूबे में नहीं देखी। लेकिन वहाँ भी लोग हँसते रहते थे। उनके चेहरों पर दुःख नहीं था। यह क्यों ? यह हिन्दुस्तान की मस्ती है। इस भूमि की यह खुसूसियत है कि यहाँ लोगों की रोनी सूरत नहीं दीखती। यहाँपर गरीबी है, लेकिन गरीबी का मुकाबला हम दिल की अमीरी से करते हैं। हमें इस तरह खुश-मिजाज देखकर बाहरवालों को ताज्जुब होता है। इसका राज क्या है ? जिन्दगी के लिए जो मामूली चीजें हैं, जो हरएक को मुहैया होनी चाहिए, वे भी हमें मुहैया नहीं होती हैं। तिसपर भी हमारे लोग खुश रहते हैं। इसमें ताज्जुब की बात नहीं है। यह वेदांत की भूमि है। इसमें मैं गुर्बत का बचाव नहीं करना चाहता हूँ, गुर्बत तो मिटानी ही है। लेकिन अन्दर की मस्ती कायम रखकर एवं उसे बढ़ाकर ही हम गुर्बत मिटाना चाहते हैं। नहीं तो आज अमेरिका और रूस जो कर रहे हैं, वैसा ही हम भी करते हैं, ऐसा माना जायगा।

हमने कल अखबार में पढ़ा कि अमेरिका में इतने मिनिटों में एक खून होता है, इतने मिनिटों में एक व्यभिचार होता है। इसका मतलब यह नहीं कि वहाँ सारा समाज बिगड़ा हुआ है। वहाँके लोग खुशहाल हैं, लेकिन उनमें अन्दर की मस्ती नहीं आयी है। इसलिए नहीं आयी कि वे बाहरी चीजों पर खुश होते हैं। बाहरी चीज पर आधार रखने से अन्दर की चीज सूखती है।

शक्तिहीन आदर्शों को नया रूप दीजिये

हमने कश्मीर में देखा कि जहाँ ज्यादा गुर्बत है, वहाँ भी मेहमा-नवाजी में कोई कमी नहीं है। लोगों में बहुत दिलेरी है। लोग मेहमानों के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं। लेकिन अभी तक इसकी ताकत नहीं बनी। घर में बिजली आयी है, उसका टैक्स भी दिया जा रहा है, लेकिन बटन नहीं दबाया तो घर में अन्धेरा ही रहेगा। अपने पास रूहानी चीज पड़ी है, लेकिन अभी तक उसकी ताकत नहीं बनी। वह बाहर नहीं आयी, इसलिए उसकी रोशनी नहीं दिखायी दे रही है। उसे जरा बाहर लाने की जरूरत है। हम उसे बाहर ला सकते हैं। उसकी ताकत कैसे बने, बिजली की रोशनी कैसे प्रकट हो, हमें इसकी तरकीब ढूँढ़नी चाहिए। तरकीब आसान है। तुलसीदासजी ने कहा है "मैं और मोर तौं तोर माया"। हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि 'मैं मेरा, तू तेरा' यह माया है। अगर हम परमेश्वर के हाथ के औजार, फकीर बन जायँ तो 'मेरा मेरा' हट सकता है। यह एक रास्ता है, लेकिन इसपर सब नहीं चल सकते हैं।

वह पीरपंजालवाला रास्ता, जिसपर हम चले थे, मामूली रास्ता नहीं है। संन्यास मार्ग में चंद लोग ही जा सकते हैं। लोग इस विचार को अच्छा तो मानते हैं, लेकिन उनका 'मेरा-मेरा' वाला संसार कायम ही रहता है। इंजिनियर रास्ता बनाता है तो धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता है, उसी तरह 'मेरा-मेरा' तोड़ने का एक रास्ता हाथ आया है। वह यह है कि आप 'मेरा' की जगह 'हमारा' बोलें। 'हमारा खेत, हमारा घर, हमारा गाँव' ऐसा बोलना शुरू कर दें। 'मेरा' की जगह 'हमारा' आ जाय तो 'मेरा' आसानी से छूट सकता है। 'मेरी जमीन' को 'हमारी मुश्तरका जमीन, सबकी शामिलात जमीन' यह रूप देना निहायत जरूरी है, क्योंकि यह साइन्स का तकाजा है। साइन्स कहता है कि तुम अलग-अलग रहोगे तो टिक नहीं सकोगे। अब जिंदगी ऐसी नहीं रही कि एक आदमी यहाँ रहे, दूसरा वहाँ। दोनों में कोई वास्ता न हो। आज साइन्स जिस चीज की माँग कर रहा है, वही बात हमारी रूहानियत भी कहती है। इसलिए हमें 'मेरा' की जगह 'हमारा' कहना होगा।

'हम' की उत्पत्ति

हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों के मुकाबले में बिहार में ज्यादा जमीन मिली। मैं सोचने लगा कि इसका सबब क्या है तो मेरे ध्यान में आया कि बिहार के लोग 'हम' ही बोलते हैं। वहाँ 'मैं'-वाली बात है ही नहीं। मैं सोचने लगा कि यह 'हम' आया

www.vinoba.in

कहाँसे ? मुझे जरा संस्कृत का शौक है। मुझे लगा कि संस्कृत के 'अहम्' में से 'अ' गया और 'हम्' रह गया। सब लोगों का 'अहम्' इकट्ठा हुआ तो 'हम' बनता है। बिहार के लोग 'हमारा नाम····है' ऐसा कहते हैं। अपने बच्चों के बारे में भी 'हमारा लड़का' कहते हैं। इसके मानी यह है कि 'मैं' छोटा नहीं हूँ। हम एक जिस्म में महदूद हैं, ऐसा दीखता है, लेकिन दरअसल ऐसा नहीं है। हमारी यह जिम्मेवारी है कि हम अपने-आपको 'मैं' कहकर केवल अपनी एक जिस्म में महदूद न रखें, बल्कि 'मैं' 'मेरा' की जगह 'हम' 'हमारा' ही कहें। ऐसा होने से हमारा दिल वसी हुआ, ऐसा माना जायगा।

साइन्स ने 'मैं' और 'मेरा' को तोड़ दिया

आज साइन्स की इतनी तरक्की हुई है कि एक मनुष्य की आँख बिगड़ गयी हो तो उसकी जगह अभी-अभी मरे हुए मनुष्य की अच्छी आँख बिठायी जाती है। फिर क्या वह मनुष्य 'मेरी आँख' कह सकेगा ? किसीको कुष्ठरोग हुआ और उसकी टाँग सड़ गयी तो उसकी टाँग काटकर तत्काल मरे हुए मनुष्य की टाँग लगायी जाती है और वह चलने लगता है तो क्या फिर वह 'मेरी टाँग' कहेगा ? साइन्स का यह करिश्मा है कि जैसे मोटर का पहिया दूसरी मोटर में लगा सकते हैं, वैसे ही एक शख्स के जुज दूसरे के जिस्म में लगा सकते हैं। बीच में बारह साल तक मैं नकली दाँत पहनता था। फिर मैंने वे दाँत फेंक दिये, यूँ सोचकर कि बुढ़ापा आया है तो यही नाटक अच्छा है। जब मैं वे नकली दाँत पहनता था तो देखनेवाले को वे बड़े खूबसूरत मालूम होते थे। कभी-कभी लोग दाँतों की तारीफ भी करते थे। मुझे कभी भी उन दाँतों का अभिमान नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि ये दाँत डॉक्टर ने बनाये हैं। मैं तो सिर्फ पहनता हूँ। इसलिए दाँतों की तारीफ होती है सो उन्हें बनानेवाले डॉक्टर की होती है, मेरी नहीं। अब साइन्स और तरक्की करेगा तो फिर 'मेरा मेरा' नहीं चलेगा।

हम क्या चाहते हैं ?

मैसूर राज्य में एक प्यारी लड़की ने हमें एक प्यारा सवाल पूछा था कि "गाँववालों ने जमीन की मिलकियत मिटा दी, सारी जमीन इकट्ठा की, सब लोग प्यार से काश्त करने लगे, 'हमारा' गाँव कहने लगे तो भी 'हमारा' याने क्या ? क्या नजदीक-वाला गाँव हमारा नहीं है ? फिर क्या गाँव-गाँव के बीच टक्कर नहीं आयेगी ?" हमने कहा कि अपने देश की लड़कियाँ ऐसा सवाल पूछती हैं, इसका मुझे फक्र है। यह सवाल पूछने लायक है और उसका जवाब देने लायक है। अब तक छोटे-छोटे कुनबे थे। अब हम गाँव का कुनबा बनाना चाहते हैं। फिर 'हमारी' वाली बात और आगे बढ़ायेंगे। हम कहते हैं कि गाँव के किसी भी शख्स के घर की शादी सारे गाँव का सार्वजनिक उत्सव होना चाहिए। सब लोग हाथ बटायें तो उस शख्स पर कोई बोझा नहीं आयेगा, नहीं तो आज एक शादी करके जिन्दगीभर बर्बादी होती है, क्योंकि शादी के लिए कर्जा लेना पड़ता है। मगर आज लोग कहते हैं कि यह बहुत आसान है, क्योंकि पहले हम यह करते ही थे। मैं कहता हूँ कि 'थे' मत कहो 'हैं' कहो। हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम एक जिस्म में महदूद नहीं, सभी जिस्मों में हम ही हैं। इस बात को हम समझेंगे तो यहाँकी कुदरत जितनी खूबसूरत है, उतनी जिन्दगी भी खूबसूरत बन सकती है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

सीर (कश्मीर) १७-८-'५९

व्यापक दृष्टि से स्थिति को समझें और समस्या का हल करें

हमसे कोई पूछे कि आपने यह काम क्यों शुरू किया है तो हम कहेंगे कि बच्चों के लिए। अभी ये जितने बच्चे हैं, वे सब देश के हैं। इसलिए चाहे दूसरों को कम-बेसी खाना-कपड़ा मिले तो भी फिलहाल हम बर्दाश्त कर सकते हैं, लेकिन बच्चों को सब चीजें एक-सी मुहैया होनी चाहिए। आप मुफ्त तालीम दें तो भी बेजमीनों के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते। उनके बच्चे गाय, भैंस चराने का काम करते हैं। गाय, भैंस से दूध और मक्खन मिलता है, जो बेचने पर कुछ पैसा मिलता है और घरवालों को थोड़ी छाँछ भी मिल जाती है। इस तरह गरीब का छोटा लड़का भी घर का कमानेवाला मेम्बर होता है। इसलिए सब बच्चों को तालीम देनी हो तो गरीबों को जमीन देना लाजमी हो जाता है। इसके लिए और दूसरी कोई राह नहीं है।

मेरा आन्दोलन बच्चों के लिए है

भूदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है। अक्लसादी सुधार के साथ-साथ सब बच्चों को तालीम मिले, यह इस तहरीक का मक़सद है। माँ-बाप इस बात को समझेंगे तो यह तहरीक कितनी गहरी है, इसका खयाल आयेगा और वे कुछ न कुछ दिये बगैर नहीं रहेंगे। देश का पहला फर्ज है कि अपने बच्चों का इन्तजाम करे। उसके बाद और जो भी हो सकता हो, करे। ऐसा करने से ही देश का फर्ज पूरा होता है।

चार सबक

आज यहाँके कुछ नौजवान हमसे मिलने आये थे। उन्होंने कहा कि हमने एक जमात बनायी है, जिसमें २०० भाई हैं। जब उन्होंने हमसे पूछा कि हम गरीबों की खिदमत किस तरह करें तो हमने उनके सामने कुछ बातें रखीं। मुझे बड़ी खुशी हुई कि वे बातें उन्होंने अपनी सूची में लिख ली और अब उसके मुताबिक काम करने का तय किया।

हमने उनके सामने चार बातें रखीं (१) हम नौजवान सियासी पार्टियों को नहीं मानेंगे (२) हम लड़ेंगे-झगड़ेंगे नहीं (३) इन्सान पर इन्सान के नाते प्यार करेंगे (४) गरीब भाइयों की खिदमत करेंगे।

सियासत का भविष्य

मुझे बड़ी खुशी हुई कि जवानों ने यह बात मानी कि हम किसी सियासी पार्टी में नहीं पड़ेंगे, गरीबों को मदद देने का, बेकारों को काम दिलाने का काम करेंगे। आप पूछ सकते हैं कि अपने देशों के और दूसरे देशों के बड़े-बड़े नेता तो सियासी पार्टियों में हैं, तब फिर बाबा हमें ऐसी सलाह क्यों देता है कि पार्टियों से अलग रहो। इसमें कोई शक नहीं कि आज की हालत में बड़े-बड़े नेता मुख्तलिफ सियासी जमातों में पड़े हैं,

www.vinoba.in

लेकिन कल की जो हालत होगी, वह दूसरी ही होगी। सियासी जमातें तो पुराने जमाने की बात हो गयी है। यह साइन्स का जमाना है। इस समय कुछ देशों के हाथों में ऐसी कूवतें आयी हैं कि वे चाहें तो दुनिया का खात्मा कर सकते हैं। इसलिए अगर हम सियासी पार्टियाँ बनाकर आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को उन खौफ़नाक हथियारों से कभी नहीं बचा सकेंगे। कभी न कभी उन हथियारों का इस्तेमाल होगा और दुनिया का खात्मा होने का डर रहेगा। इसलिए हमें समझना चाहिए कि कल की और आज की सियासत में पार्टीवालों की जगह थी और बड़े-बड़े लोग उसमें पड़ते थे, लेकिन आगे की जिंदगी का जो नक्शा होगा, उसमें सियासत को वह जगह हासिल नहीं होगी, जो कि आज हासिल है।

पार्टी और खिदमत

मैं जिस लंबी नजर से देखता हूँ, उस नजर से उन जवानों ने नहीं देखा होगा, फिर भी वे इतना समझे हैं कि हमें पार्टीवालों के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए। ये सियासी पार्टीवाले गरीबों की खिदमत करते हैं तो उसमें भी उनका मकसद यही रहता है कि अपनी पार्टी को फायदा मिले। याने वे मीठी खिदमत में भी जहर मिला देते हैं। जहर मिलाया हुआ मीठा लड्डू भी किस काम का? नतीजा यह होता है कि वह खिदमत दिलों तक नहीं पहुँचती है, दिलों को जोड़ने का काम नहीं कर सकती है, दिलों को तोड़ने का ही काम कर सकती है। सच्ची खिदमत वही है, जिसके जरिये हम दिलों को जोड़ें। अगर मैंने सौ भाइयों की जिन्दगी के लिए कुछ इमदाद दी और उन्होंने मुझे चुनाव में वोट दिया तो नतीजा यह होगा कि मैंने इतने आदमी अपने बना लिये, जो दूसरों के खिलाफ रहनेवाले हैं। इस तरह मैंने दिलों को तोड़ने में, समाज के टुकड़े करने में मदद पहुँचायी। इसलिए पार्टी के फायदे के मक़सद से जो गरीबों की खिदमत की जाती है, वह सच्ची खिदमत नहीं है। वैसे पुराने बादशाह भी कुछ न कुछ खिदमत करते ही थे, जिससे कि गरीब लोग उनकी हुकूमत की ताईद करें। लेकिन वह खिदमत दिलों को जोड़नेवाली नहीं होती थी।

इन्किलाब तब आता है

नौजवानों ने हमारे इस विचार को पसन्द किया। उनकी पसन्दगी यह बता रही है कि नौजवानों का दिमाग कितना सलीम (बड़ा) है, साबित है, 'कल्बे-सलीम' (बड़ा दिल) है। यही तजुरबा मुझे हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हुआ है। जगह-जगह मैंने देखा है कि जवानों को बाबा की बात जँचती है और वे समझते हैं कि बाबा जो काम करता है, वह इन्किलाब लानेवाला है। इन्किलाब तब होता है, जब 'इन्किलाबे-कल्ब' (हृदय में क्रांति) होता है। सिर्फ माहौल (वातावरण) बदलने से इन्किलाब नहीं होता। जब इन्किलाबे-कल्ब और माहौल में इन्किलाब, दोनों होते हैं। तब सच्चा इन्किलाब होता है। इस बात को उन नौजवानों ने महसूस किया

समस्या का हल प्यार से होगा

गरीब, अमीर का फर्क मिट जाना चाहिए, हवा और पानी के जैसे जमीन सब को मुहैया होनी चाहिए और हमें ऐसे खयाल से काम करना चाहिए कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायेंगे। आज ही हमने अखबार में पढ़ा कि उत्तर प्रदेश के एक जिले के भूदान-काम के मुखिया को तीन गाँवों में भूदान मिला। मिली हुई जमीन गरीबों को देकर उन्होंने वहाँ किसीको भी बेजमीन नहीं रहने दिया। हमारा दिल कहता है कि कश्मीर में भी इसी तरह हो सकता है। लोग कहते हैं कि कश्मीर में जमीन का मसला हल हो चुका है, लेकिन अरे भाई, आप यह समझ लो कि यहाँपर कानून बन गया, किन्तु मसला हल नहीं हुआ है। मालिकों ने अपने भाई-भतीजों में जमीन बाँट ली है। फिर भी सरकार को जो कुछ थोड़ी-सी मिली, वह मुजारों में तक्सीम हुई, और बेजमीन ऐसे ही रह गये। मालिक, मुजारे और बेजमीन, इन तीनों को इकट्ठा करने का और दिल जोड़ने का काम कानून ने नहीं किया है, इसलिए अभी कश्मीर में जमीन का मसला कायम है। उसे अब प्यार से हल करना होगा। यहाँकी सरकार ने वादा किया है कि उसके पास जो जमीन है, वह बेजमीनों में बाँटी जायगी। जब तक मैं कश्मीर में हूँ, तब तक वह जमीन बटेगी तो कश्मीर की ताकत बढ़ेगी और कश्मीर की तथा दुनिया की तरक्की होगी।

हम सबको यह तय करना चाहिए कि भगवान ने बेजमीनों के घर में भी बच्चे दिये हैं तो उन्हें जमीन देना और दिलाना हमारा फर्ज है। मेरा भरोसा है कि लोगों के पास पहुँचने पर वे दिल खोलकर जमीन देंगे। सिर्फ उनके पास पहुँचनेवाले कारकून (कार्यकर्ता) चाहिए। ऐसे कारकून, जो अपनी कुछ जमीन दे चुके हों। सिर्फ नसीहत देनेवाले तो दुनिया में बहुत होते हैं, लेकिन अपना काम करके, प्यार से दूसरों के पास पहुँचनेवाले और उन्हें विचार समझानेवाले कारकून हों, तभी कामयाबी हासिल होती है।

कश्मीरी सीखें

मैंने देखा कि यहाँके लोग सिर्फ कश्मीरी ही समझते हैं। हमारी उर्दू तकरीरें तो जैसे सिर पर से गंगा बह जाती है, वैसे ही बह जाती हैं। मैं चाहता हूँ कि यहाँ स्कूलों में कश्मीरी सिखायी जाय। नहीं तो देहात और शहरों के बीच दिवाल खड़ी होगी और दोनों में टक्कर होगी, जो देश के लिए खतरनाक है। यहाँ उर्दू और हिन्दी खूब फले-फूले, लेकिन उतने से काम नहीं होगा। स्कूलों में अच्छी कश्मीरी भी सिखायी जानी चाहिए। हम सबका दिल एक हो। उसके लिए यह जरूरी है कि कश्मीरी में अच्छी अदब (साहित्य) बढ़े और सबको कश्मीरी अच्छी तरह से मालूम हो, तकरीरें भी उसीमें हों। ◆◆◆

अनुक्रम

१. यह समुदाय का युग है, इसमें 'मैं' और 'मेरा' नहीं चलेगा
नगरौठा ९ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९९
२. व्यापक दृष्टि से स्थिति को समझें और समस्या का हल करें
सीर १७ अगस्त '५९ " ७०१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in